नागरिक–शास्त्र

1. राजनीतिक सिद्धान्त और विचार

- राजनीतिक सिद्धान्त की प्रकृति, इसकी मुख्य चिंताएं, पतन और पुनरोत्थान, प्रजातंत्र,स्वतंत्रता, समानता, न्याय, सम्प्रभुता, उदारवाद एवं मार्क्सवाद।
- शक्ति , सत्ता एवं वैधता।
- **भारतीय राजनीतिक विचारक :** मनु, कौटिल्य, विनायक दामोदर सावरकर, गाँधी तथा अम्बेडकर।
- **पाश्चात्य राजनीतिक विचारक :** प्लेटो, अरस्तु, बेंथम, जे0एस0मिल, हीगेल और मार्क्स।
- **आधुनिक राजनीतिक विचारक :** लेनिन, माओ, ग्राम्शी तथा जॉन रॉल्स।

2. तुलनात्मक राजनीति एवं राजनीतिक विश्लेषण

- तुलनात्मक राजनीति का एक अनुशासन के रूप में उद्‌भव; प्रकृति और विषय क्षेत्र।
- तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के उपागमः पारम्परिक एवं आधुनिक।
- **शासन के प्रकार :** एकात्मक तथा संघात्मक, संसदात्मक तथा अध्यक्षात्मक।
- **शासन के अंग :** कार्यपालिका, व्यवस्थापिका, न्यायपालिका– तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में उनके अन्तरसम्बन्ध।
- दल–प्रणालियाँ तथा दबाव–समूहः चुनावी व्यवस्थाएँ।
- राजनीतिक विकास, राजनीतिक संस्कृति और राजनीतिक समाजीकरण।
- राजनीतिक अभिजन; प्रजातंत्र का अभिजात्य सिद्धान्त।

3. भारतीय शासन एवं राजनीति

- **राष्ट्रीय आन्दोलन**– 1. प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के प्रभाव ।
  2. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का निर्माण एवं कार्य
  3. स्वतंत्रता आंदोलन में गाँधी जी की भूमिका।
  4. स्वतंत्रता आन्दोलन में क्रान्तिकारियों का योगदान।
- संविधान सभा–रचना एवं कार्य।
- प्रस्तावना, नागरिकता, मौलिक अधिकार, राज्य के नीति–निदेशक–सिद्धान्त तथा मौलिक कर्तव्य।
- संवैधानिक संशोधन–प्रक्रिया एवं सामाजिक परिवर्तन।
- **संरचना और प्रकार्य**–1–राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्रि–परिषद्, संसदात्मक व्यवस्था की कार्य–शैली।
- **संरचना और प्रकार्य**–2– राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्रि–परिषद्, राज्य विधायिका।
- **स्थानीय स्वायत्त शासन :** (ग्रामीण और नगरीय), उत्तराखंड राज्य के विशेष संदर्भ में, स्थानीय स्वायत्त शासन में महिलाओं हेतु आरक्षण और उसका प्रभाव।
- **संघवाद :** भारत में संघवाद की संरचना, स्वायत्तता की मॉगें और पृथकतावादी आन्दोलन, केन्द्र–राज्य सम्बन्धों के उभरते प्रतिमान।
- **न्यायपालिका :** उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय (संरचना एवं प्रकार्य), न्यायिक पुनरावलोकन, न्यायिक सक्रियता, जनहित याचिका सम्बन्धी मुकदमों सहित, न्यायिक सुधार।
- भारत में पंथ निरपेक्षवाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद एवं जातिवाद की राजनीति।
- भारत में लोकपाल एवं लोकायुक्त।
- भारत के नवीन सामाजिक आन्दोलन (कृषक आन्दोलन, महिला आन्दोलन, पर्यावरण तथा विकास प्रभावित जन आन्दोलन)
- राजनैतिक दल एवं जनमत।
- उत्तराखंड राज्य आंदोलन में महिलाओं की भूमिका।
- नीति आयोग–संरचना एवं प्रकार्य।

- भारत में चुनाव आयोग और चुनाव सुधार।
- उत्तराखंड में महिला सशक्तिकरण।
- उत्तराखंड में मानवाधिकार आयोग की रचना एवं कार्यविधि।

4. लोक प्रशासन

- लोक प्रशासन : अर्थ, प्रकृति एवं क्षेत्र।
- **संगठन के सिद्धान्त :** सूत्र और स्टाफ, पद सोपान, आदेश की एकता, नियंत्रण का क्षेत्र, केन्द्रीयकरण और विकेन्द्रीकरण, **संगठन के प्रकार**–औपचारिक एवं अनौपचारिक, **संगठन के प्रारूप**– विभाग और लोक निगम।
- **मुख्य कार्ययपालिका :**– प्रकार, कार्य और भूमिका।
- **कार्मिक प्रशासन :**– भर्ती, प्रशिक्षण और पदोन्नति।
- **नौकरशाही :**– प्रकार तथा भूमिका, मैक्स वेबर और उनकी आलोचना।
- **वित्तीय प्रशासन :**– बजट, भारत में बजट निर्माण प्रक्रिया तथा नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की भूमिका।
- **सुशासन :**– प्रशासनिक भ्रष्टाचार की समस्याएँ, पारदर्शिता, जवाबदेही उत्तराखंड के विशेष संदर्भ में
- **सूचना का अधिकार**।

5. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

- अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अर्थ प्रकृति एवं क्षेत्र।
- **शक्ति :** शक्ति के तत्व, राष्ट्रीय हित का निर्माण और उन्नयन, विदेश नीति के निर्धारक तत्व।
- **शस्त्र :** पारम्परिक, नाभिकीय एवं जैवरासायनिक, परमाणु निवारण।
- शस्त्रस्पर्धा, शस्त्र नियंत्रण एवं निःशस्त्रीकरण।
- विवादों का शान्तिपूर्ण समाधान एवं कूटनीति।
- **गुट–निरपेक्षता तथा वैश्वीकरण**।
- नव अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था, उत्तर–दक्षिण संवाद, दक्षिण–दक्षिण सहयोग, विश्व व्यापार संगठन, (डब्ल्यू0 टी0 ओ0)।
- **संयुक्त राष्ट्र :** उद्देश्य, लक्ष्य, संरचना।
- **संयुक्त राष्ट्र की कार्य प्रणाली :** शान्ति, विकास तथा पर्यावरणीय संदर्भ में।
- **क्षेत्रीय और उप–क्षेत्रीय संगठन** विशेषतः '**सार्क**', **आसियान' और 'ओपेक**'।
- **अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भारत की भूमिका :** भारत के पड़ोसी देशों (पाकिस्तान, भूटान, बाग्लादेश और श्रीलंका) एवं प्रमुख देशों (ब्रिटेन, अमेरिका, रूस और चीन) से सम्बन्ध, भारतीय विदेश नीति और कूटनीति, भारत की परमाणु नीति।
- आतंकवाद और राज्य प्रायोजित आतंकवाद।
- राष्ट्रीय सुरक्षा की बदलती अवधारणा एवं राष्ट्र राज्य की चुनौतियां।